19-2-68 प्रात: क्लास ओमशान्ति पितात्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, यह जो आदी सनातन देवी-देवता धर्म था इसको हिन्दु धर्म में क्यों लाया। कारण निकालना होता है ना। किन किन को यह अपनी नालेज लागू पर सकते हैं। जांच करनी होती है। आदी सनातन तो देवी देवता धर्म ही है। लागू भी उन्हों को पड़ेगा। आदी सनातन देवी देवतायें ही थे। फिर विकारी हुये तो अपन को देवता कह न सके। तो आदीसनातन देवी देवता धर्म के बदली आदी सनातन हिन्दुधर्म कह दिया है। आदी सनातन अक्षर भी रखा है। सिर्फ देवी-देवता के बदली हिन्दु कर दिया है। उस समय इस्लामी आये हैं तो उन बाहर वालों ने आकर हिन्दुसनातन नाम रखा। पहले हिन्दुस्तान नाम था नहीं। तो आदी सनातन हिन्दु, देवता धर्म वाले ही समझनी चाहिए। वह असर कर के धर्मात्मा होते हैं। जो आदी सनातनी है। सभी आदी सनातन नहीं है। जो पीछे आये हैं उनको आदी सनातन नहीं कहेंगे। हिन्दुओं में भी पीछे आने वाले आने वाले हो गये। तो आदी सनातन हिन्दुओं की जांच करनी चाहिए। उन्हों को बताना चाहिए तुम्हारा असल देवता धर्म था। तुम हो सतोप्रधान आदी सनातन शुरू के थे। फिर सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो। पुनर्जन्म लेते2 अभी फिर तुम सतोप्रधान बनो याद की यात्रा से। उन्हों को शायद यह दवाई भाये पड़े। बाप धनी है ना। जिसको दवाई भाये पड़ती हैं तो उनको देनी चाहिए ना। जो आदी सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे उन्हों को ही स्मृति दिलानी चाहिए। जैसे तुम बच्चों की स्मृति आई है। बाप समझाते हैं कैसे तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो फिर तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम बच्चे सतोप्रधान बन रहे हो याद की यात्रा से। जो आदी सनातन हिन्दु होंगे वही असल में देवीदेवता होंगे और वही देवताओं के पूजने वाले होंगे। उसमें भी जो शिव की वा ल0ना0, राधे कृष्ण, राम-सीता के भक्त हैं। अभी स्मृति आई है जो सूर्यवं0 वही फिर चन्द्रवंशी बनेंगे। हिसाब है ना। तो ऐसे होना चाहिए। तुम्हारे पास प्रदर्शनी में बहुत आते हैं। वहां तो फार्म भराये न सकेंगे। फार्म उन से भराना है जो समझने के लिए आते हैं। मुख्य सेन्टर्स पर फार्म भराने लिए भी जरूर होनी चाहिए। यह भी जांच करेंगे सब के पास फार्म भराने का है प्रबन्ध है? जिनके पास फार्म भराने की किताब नहीं है वह अपना नाम भेज दें। जो भी आये उनको लेशन तो शुरू से ही देंगे ना। पहली2 मुख्य बात है जो बाप को जानते नहीं। तो उन्हों को शर्माना पड़ता है। तुम बड़े बाप को नहीं जानते हो? तुम असल में तो पारलौकिक बाप के हो। यहां आकर लौकिक के बने हो। तुम पारलौकिक बाप की मूल हो। शर्माना चाहिए। वेद का बाप है ही स्वर्ग का रचता। यहां यह अनेक धर्म होते नहीं। तुम फार्म जो भरते हो उस पर ही सारा मदार होता है। कोई बच्चे भल समझाते बहुत अच्छा हैं परन्तु योग है नहीं। अशरीरी बन बाप को याद करे वह है नहीं। याद में ठहर नहीं सकते। भल समझाते हैं हम बहुत अच्छा समझा सकते हैं, म्युजियम प्रदर्शनी आदि भी खोलते हैं परन्तु याद बहुत ही कम है। अपनको आत्मा समझ बाप को याद करते रहे। इसमें ही मेहनत है। तो बाप वारनिंग देते हैं ऐसे मत समझो हम तो बहुत अच्छा कनवन्स कर सकते हैं। इससे क्या फायदा। कर के स्वदर्शनचक्रधारी बन गये। परन्तु इसमें तो विदेही बनना है। कर्म करते अपनको आत्मा समझना है। आत्मा इस शरीर द्वारा कर्तव्य करती है। यह अभ्यास करने भी नहीं आता। ख्याल में भी नहीं आता। उनको कहेंगे बुधू बाप को याद नहीं कर सकते। सर्विस करने की ताकत नहीं। याद बिगर आत्मा में ताकत कहां से आयेगी। बैटरी कैसे भरेगी। चलते2 खड़े हो जाते हैं। ताकत न रहेगी। देही जाता है रिलीजन इज भाईट। आत्मा के स्वधर्म में टिकना है। इससे ही ताकत मिलती है। बहुतों को याद करने आता ही नहीं। सिकल से ही पता पड़ जाता है। और कब याद आयेगा, बाप की याद ठहरेगी नहीं। से ही वह मिलेगा। याद में खुशी में बड़े ही तन्दुरुस्त रहेंगे। फिर दूसरे जन्म में शरीर भी ऐसा स्वस्थ मिलेगा। आत्मा प्यूर है तो शरीर भी प्यूर मिलेगा। कहेंगे यह 24कैरेट गोल्ड है। 24कैरेट जैसा है। सब समय तो सभी नाईन(9)कैरेट बन गये हैं। सतोप्रधान को 24कैरेट कहेंगे। सतो को 22 कैरेट,.....

यह बड़ी समझने की बातें हैं। बाप समझाते रहते हैं। एक तो पहले फर्म भराना चाहिए। 3-4बार समझा कर फिर फर्म भरओ तो पता पड़े कहां तक रेसपान्ड करते हैं। कितनी धारणा की है। फिर यह भी आता है याद की यात्रा में रहते हैं? तमोप्रधान से सतोप्रधान तो याद की यात्रा से ही बनना है। वह है भक्ति दुर्गति मार्ग की जिसमानी यात्रा। यह है रूहानी यात्रा। रूह यात्रा करती है। मन बुद्धि भी यात्रा रूह करती है, रूह और जिसम दोनो ही वह यात्रा करती है। इसमें सिर्फ रूह ही यात्रा करती है। पतित-पावन बाप को याद करनेसे ही आत्मा पुण्य बनती है। तेज भी इस पर ही आवेगा। कोई जिज्ञासु को कलवा आद दिखाना है तो बाबा का प्रवेशता भी हो जाती है। मां-बाप दोनो ही मदद तो करते रहते हैं ना। कहां नालेज की मदद कहां योग की मदद करते रहते हैं। बाप तो है ही विदेही। शरीर का भान है नहीं। तो बाप दोनो ही ताकत की मदद दे सकते हैं। योग होन होगा तो ताकत मिलेगी कैसे। समझा जाता है यह वियोगिन है वा ज्ञानी है। दिनप्रति दिन योग तिर नई बातें भी समझाईजाती है। आगे यह थोड़े ही समझते थे कि अपन की आत्मा एक बाप को याद करो। इस समय बापजोर से उठाते रहते हैं, बहिन-भाई का सम्बन्ध भी हट जाये सिर्फ भाई भाई की दृष्टि रहे। हम आत्मा भाई हैं। यह तो बहुत ही ऊंच चला जाता पड़ता है। अन्त तक यह पुरुषार्थ चलना है। सतोप्रधान जब बन जावेंगे तब यह शरीर छोड़ देंगे। पहले जो शरीर छोड़ देते है वह जरूर कम होंगे। या तो पीछे आकर पुरुषार्थ करेंगे। या तो जितने तक किया है वही कायम रहेगा। क्योंकि जितना देरी पड़ती जाती है तो छोटे बच्चे क्या पुरुषार्थ करेंगे। कुछ हिसाब है ना। इसलिए जितना हो सके पुरुषार्थ कर बढ़ना है। बूढ़े बूढ़ों को तो और ही सहज है। हमको तो अभी वापस जरूर जाना है। जवान को कब ऐसे खयालात नहीं आवेंगे। बूढ़े वानप्रस्ती रहते हैं। समझा जाता है अब वापस जाना है। यह तो सब ज्ञान की बातें समझने की है। झाड़ की वृद्धि भी होती रहती है। 10 से 20, 20से 40 होंगे। ताकि झाड़ पूरा तैयार हो जावेगा। कांटों से बदल कर नया फूलों का झाड़ बनना है। नयेसे फिरपुराना होना है। पहले झाड़ छोटा होगा। बढ़ता जावेगा। वृद्धि होते2 पिछाड़ी में कांटे बन जावेंगे। पहले होते हैं फूल। नाम ही है स्वर्ग। फिर बाद यह खुशबूयें बहुताकत न रहेंगी। कांटे में खुशबूयें नहीं होती हैं। हल्के2 फूलों में भी खुशबूयें नहीं होती है। बाप बागवान भी है ना। खेवईया भी है। सभी की देरी पार करते हैं। देरी पार किसकोकहा जाता है वह भी जो सयाने-समझ हैं वह उनका अर्थ समझते हैं। जो समझी नहीं है वह पुरुषार्थ भी नहीं करते हैं। नम्बरदार तो होते हैं ना। एरोपलेन कोई2 तो कहते हैं आवाज़ से भी तीखा जाता है। आत्मा कैसे भागती है यह किसको भी पता नहीं है। आत्मा तो राकेट से भी तीखी जाती है। आत्मा जैसी तीखी और कोई चीज़ होती नहीं। उन राकेट आद में ऐसी कोई चीज़ डालते हैं जो इतना जल्दी उड़ाये ले जाती है। विनाश के लिए कितना वास्द आद तैयार करते रहते हैं। इतने बम्ब्स क्या करेंगे। स्टीमर, एरोपलेन में भी बम्ब्स ले जाते हैं। आजकल पूरी तैयारी रखते हैं। अखबारों में लिख लिखते हैं ऐसे नहीं कह सकते है किबम्ब्स काम में नहीं लावेंगे। हो सकता है बम्ब्स चला दें। ऐसे कहते रहते हैं। तो जिनके पास बम्ब्स हैं वह बैठ जावेंगे क्या। चलानी ही पड़ेगी। यह सब तैयारियां हो रही है। विनाश तो जरूर होना ही है। बम्ब्स न छूटे-, विनाश न हो ऐसे तो हो नहीं सकता। तुम्हारे लिए नई दुनिया जरूर चाहिए। यह ड्रामा में नूंध है। इसलिए तुमको तो बहुतखुशी होनी चाहिए। शिवबाबा मौत मलूका... ड्रामा अनुसार सब को मरना ही है। तुम बच्चों को ड्रामा का ज्ञान होने कारण तुम हिलते नहीं हो। साक्षी हो देखते हो। रोने-पीटने से क्या होगा। समय पर शरीर तो छोड़ना ही होता है। तुम्हारी आत्मा जानती है दूसरा जन्म हम राजाई में लेंगे। मैं राजकुमार बनूंगा। आत्मा को पता है तब तो एकशरीर छोड़ दूसरा लेती है। सर्प की आत्मा है ना। कहेंगे हम एक खोल छोड़ दूसरा लेते हैं। कब तो वह भी शरीर छोड़ेंगे ना। फिर बच्चा बनेंगे, बच्चे तो पैदा होते हैं ना। सर्पों का। कछुओं का। पुनर्जन्म तो सब को लेना होता है। यह सब खयालात करनी

होती है। सब से मुख्य बात है बाप को याद करना बहुत प्यार से। जैसे बच्चे मां-बाप को एकदम लिपट जाते हैं। वैसे ही आत्मा को बुधि के योग से एकदम बाप के साथ लिपट जाना चाहिए। बहुत प्यार से। अपने को देखना भी हम कितनी धारणा कर रहे हैं। (नारद का मिशाल) भक्त जब तक ज्ञान न उठावे तब तक देवता बन न सके। यह सिर्फ एक ल0 को वरने की बात नहीं। यह तो समझने की बात है। तुम बच्चे समझते हो हम सतोप्रधान थे तो विश्व पर राज्य करते थे। अभी फिर सतोप्रधान बनने लिए बाप को याद करना है। यह मेहनत तुम कल्प2 यथायोग, यथा शक्ति करते हो। हरेक समझ सकते कहां तक हम किसको समझा सकते हैं। देहाभिमान से कितना हम निकलते जाते हैं। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूं। मैं आत्मा इन से काम लेता हूं। यह तो मेरी आरगन्स हैं। हम सभी पार्ट धारी हैं ड्रामा में। यह बेहद का बड़ा नाटक है। उसमें नम्बरवार सभी एक्टर्स हैं। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। कौन2 हैं। तुम बच्चे बाप द्वारा ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त को जान गये हो। रचता द्वारा रचना की नालेज मिलती है। रचता ही आकर अपनी रचना का राज बताते हैं। यह उनका थ्रो जिसमें प्रवेश कर आये हैं। कहेंगे तक तो दो आत्माएं रहती है। सो यह तो काम न बात है। पितर खिलाते हैं तो आत्मा आती है ना। आगे बहुत आते थे। उनसे पूछते भी थे। अभी तो तमोप्रधान बन गये हैं। कोई2 ब्राह्मण भी बुलाते हैं। बतलाते हैं हम आगे जन्म में फलाना था। फ्यूचर का कोई नहीं बताते हैं। पिछाड़ी का बताते हैं। पर तो वे विश्वास नहीं कर सकते। व्यास जिसको भगवान कहते हैं, उसने भी शास्त्रों में क्या2 बैठ लिखा है। वन्डर है ना। कितनी झूठी बातें हैं। जिस में कुछ भी फायदा नहीं। यह भी अभी तुम समझते हो। बाप कहते हैं भक्ति की बक2 बन्द। अभी शान्ति में रहना है। भक्ति में क्या होता है, ज्ञान में क्या होता है यह तो जरूर सुनाना पड़े। बाप आकर भक्ति मार्ग के दलदल से निकालते हैं। दलदल में फंसते2 एकदम पत्थर बुधि हो जाते हैं। यह भी बतायें पारस बुधि थे, यह हैं पत्थर बुधि। तब ही बाबा ने लिखाया है हरेक अपने से पूछे। तुम भक्ति में हो या ज्ञान में हो। दुर्गति में हो या सदगति में हो? युक्ति युक्त लिखना चाहिए। यह लिखते रहो हैं जो सारे प्लेन से भी गिरा सकते हैं। अपने आप से पूछें। हम हैं कलियुगी नर्कवासी हैं या सतयुगी स्वर्गवासी हैं? स्वर्ग के हम लायक हैं? इनको गोल्डेनएज वा सतयुग कहते हैं। तो कोई भी नहीं कहेगा। ऐसे2 बीजे अक्षर डालना है। आखीरीन किस न किस की बुधि में बैठ ही जावेगा। बैठेगा भी उनको जो देवता बनने वाला होगा। प्लेन से चाहे एक पर्चा गिरावे चाहे दो गिरावे। दो2 भी फैल सकते हैं। देहली, कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद जो हैं तो एक ही बार खबर गिरानी चाहिए। अखबार में भी पड़ेगा ब्रह्माकुमारियों ने यह पर्चा छपवाई है। वन्डर करते हैं ना। ऐसी मेहनत करते वायुमंडल को सुधरते2 तुम्हारा तरफ भारी हो जावेगा। वह तरफ हल्का हो जायेगा। अभी भक्ति का कांटा भारी है। फिर ज्ञान का भारी होगा वह हल्का हो जायेगा। होने का तो है ना। अभी बच्चे भी कच्चे हैं। साल्ड नहीं बने हैं। ज्ञान योग में पोले हैं। मजबूत होंगे तो फिर साल्ड हो जायेंगे। इन सब बातों पर गौर कर स्पष्ट में लाना पड़े। अभी तो बहुत पोले वाले हैं। तुम्हारे में भी बखर भरते रहते हैं। भारतवासी देवतायें कितने साल्ड थे। धन से भरपूर थे। अभी तो खाली हैं। वह साल्ड डेन्ट यह इनसाल्ड डेन्ट। तुम खुद भी बनते हो। भारतवासी कितने अभी क्या हैं। भूख मरना ही पड़ेगा। अनाज-पानी कुछ मिलेगा नहीं। कहां से पानी से डूब जावेंगे कहीं पानी का बून्द भी नहीं। इस समय दुःख के बादल हैं। सतयुग में होंगे सुख के बादल। खुल का पता तुम बच्चों को ही है। पुरानी दुनिया नई दुनिया यह आधा2 है। यह सब पाईन्ट बुधि में रखनी है पर समझाना अच्छा है वह लौकिक यह पारलौकिक। यह पारलौकिक बाप एक ही बार में मिलता है। यह है आयरनएज फिर गोल्डेन एज जरूर बननी है। तुम अभी गाम पूर हो। दिल साफ है हासिल। रोज अपने से पूछो हम कोई खराब कर्म तो नहीं किया। किसके लिए अन्दर में शैतानी खुराफात नहीं आई। अपनी मस्ती में रहे या अरबुद्धि गमुद्धि। आप का परमात्मा है। मामेकयाद करो। अगर याद नहीं है तो नाफरमानबरदार हो जाते हैं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग आरनमस्ते।